Vol 6 Issue 7 Jan 2017

ISSN No :2231-5063

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Welcome to GRT

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2231-5063**

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board.Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

International Advisory Board

Kamani Perera
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea,Romania

Mohammad Hailat
Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

......More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University,Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University,Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary,Play India Play,Meerut(U.P.)

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh,
Vikram University, Ujjain

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU,Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra
Maulana Azad National Urdu University

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.aygrt.isrj.org

GOLDEN RESEARCH THOUGHTS

ISSN: 2231-5063
IMPACT FACTOR : 4.6052(UIF)
VOLUME - 6 | ISSUE - 7 | JANUARY - 2017

जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में आगत–निर्गत सूचक का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. डिगर सिंह फर्स्वाण
विभागाध्यक्ष (बी.एड) , देवभूमि इन्स्टीट्यूट ऑफ प्रोफेशनल एजुकेशन लालपुरए रूद्रपुरए उधम सिंह नगर ,उत्तराखण्ड.

सारांश –
प्रस्तुत शोध अध्ययन में जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में आगत–निर्गत सूचक का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कुल विद्यार्थियों का अध्ययन हेतु चयन किया गया है। प्राथमिक विद्यालयों में आगत–निर्गत सूचक का अर्थ प्राथमिक शिक्षा चक्र की प्रथम कक्षा 01 में अध्ययनरत् कुल बच्चों द्वारा प्राथमिक शिक्षा चक्र की अन्तिम कक्षा 5 को पूर्ण करने में व्यय किये वर्षो से है। आदर्श स्थिति में प्राथमिक शिक्षा चक्र को पार करने में पॉच वर्ष लगते है। प्राथमिक शिक्षा में एक कक्षा में एक से अधिक वर्ष व्यतीत करने तथा बार–बार अनुतीर्ण होने से अपव्यय एवं अवरोधन जैसी समस्यायें बढ़ने लगती है जिससे नामांकन और ठहराव में प्रतिकूल प्रभाव पढ़ता है। तुलनात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में निर्गत सूचक में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है। शिक्षा के सार्वभौमीकरण को दृष्टिगत् रखते हुए सरकार तथा शिक्षा विभाग द्वारा निरन्तर बुनियादी तथा प्राथमिक शिक्षा तक सबकी पहुॅच तथा गुणवत्तायुक्त शिक्षा देने की पहल की जा रही है जिससे बच्चों के भविष्य का ठोस आधार विकसित हो सके। परन्तु कई कारणों से जैसे माता–पिता की निरक्षरता, बेरोजगारी, आर्थिक तंगी, विषम भौगोलिक परिस्थितियॉ तथा समुचित व्यवस्थाओं का अभाव होने से आज भी बुनियादी शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोधन जैसी समस्यायें व्याप्त है जिनके समाधान किये बिना गुणवत्तापरक बुनियादी शिक्षा प्रदान कर राष्ट्र तथा समाज के भविष्य का ठोस आधार विकसित करना संभव नहीं है।

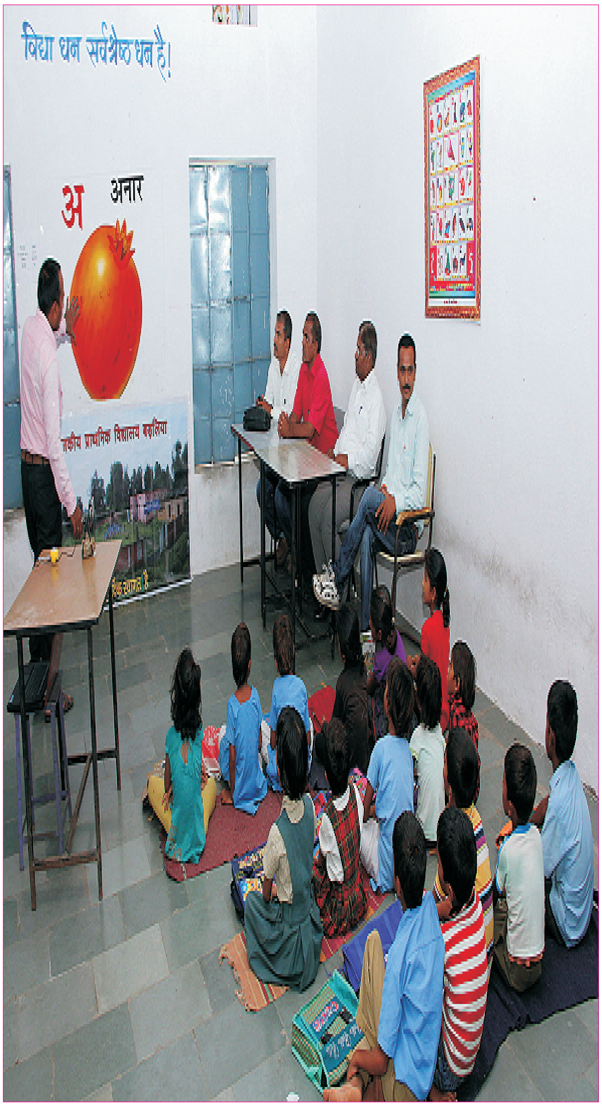

डॉ. डिगर सिंह फर्स्वाण

शब्द कुंजी: अध्ययनरतए आगत–निर्गत सूचकए तुलनात्मक अध्ययनए प्राथमिक शिक्षा चक्रए आदर्श स्थितिए नामांकन एवं ठहराव।

प्रस्तावना

शिक्षा एक निरन्तर तथा गतिशील प्रकिया है। शिक्षा के बिना मनुष्य का विकास संभव नहीं है। प्राथमिक शिक्षा किसी भी शिक्षा की नींव होती है। प्राथमिक शिक्षा के द्वारा ही बच्चे को सम्प्रेषण के माध्यम से भाषा का ज्ञान कराया जाता है। इनमें देखने–समझने की शक्ति विकसित होती है तथा उन्हें अध्ययन कौशल में प्रशिक्षित किया जाता है। यह शिक्षा आगे की शिक्षा प्राप्त करने के साधन या माध्यम होते है। इन्हीं पर आगे की शिक्षा निर्भर करती है। इस प्रकार प्राथमिक शिक्षा भविष्य के शिक्षा की नींव होती है। यदि यह नींव मजबूत होती है तो बच्चे की आगे की शिक्षा सुचारु रुप से चलती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण की दिशा में ठोस प्रयास किये गये। सन 1951 में प्रथम पंचवर्षीय योजना में प्राथमिक शिक्षा के विकास एवं उसके उन्नयन पर 85 करोड़ रुपये व्यय किये गये। 1957 में अखिल भारतीय प्राथमिक शिक्षा परिषद का गठन किया गया और इसे प्राथमिक शिक्षा के प्रसार एवं उन्नयन के सम्बन्ध में सुझाव देने का कार्य सौंपा गया। इसके साथ–साथ प्राथमिक शिक्षा के प्रसार हेतु कई अन्य योजनाएं भी

VOLUME - 6 | ISSUE - 7 | JANUARY - 2017

संचालित की जा रही है। वर्तमान में अनिवार्य व निःशुल्क शिक्षा के सार्वभौमीकरण का अर्थ व्यापक रुप में लिया जाता है।

औपचारिक शिक्षा व्यवस्था के प्रथम स्तर को प्राथमिक शिक्षा स्तर कहा जाता है। कोई भी राष्ट्र या समाज प्राथमिक शिक्षा के सफल संचालन के द्वारा ही अपने अभीष्ट लक्ष्य तक पहुँच सकता है। समाज एवं राष्ट्र के चहुमुखी विकास के लिए तथा विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु प्राथमिक शिक्षा का महत्व कम करके नहीं आँका जा सकता है, क्योंकि बालक के भविष्य की दिशा प्राथमिक शिक्षा से ही निर्धारित होती है। प्रारम्भिक शिक्षा के सफल संचालन के लिए आवश्यक है कि विद्यार्थी कक्षा में निर्धारित आयु में नामांकित होकर निरन्तर कक्षा उत्तीर्ण करते हुए निर्धारित समय में प्राथमिक शिक्षा पूर्ण कर ले जिससे विद्यार्थी गुणवत्तापरक शिक्षा प्राप्त कर सकें तथा शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोधन को कम किया जा सकता है।

हमारे देश में प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करना 6 से 14 वय वर्ग के प्रत्येक बच्चे का मौलिक अधिकार माना है। प्रत्येक बच्चे को जो 6 से 14 वय वर्ग के हैं उन्हें प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने का कानूनी अधिकार प्राप्त हो गया है। परन्तु वस्तुस्थिति क्या है ? प्रारम्भिक शिक्षा की पहुंच देश में रहने वाले 6–14 वय वर्ग के प्रत्येक बच्चे तक है या नहीं ? इन सब बातों पर विचार करना व उसके प्रभावों व कारणों को जानना अत्यन्त आवश्यक है, जिससे प्रारम्भिक शिक्षा में आने वाली समस्याओं को दूर करने का प्रयास किया जा सके। वर्तमान समय में प्राथमिक शिक्षा में प्रवाह आरेखण एक ज्वलन्त समस्या है। प्रवाह आरेखण के अन्तर्गत नामांकन, प्रवेश, कक्षा प्रोन्नत, कक्षा पुनरावृत्तिए कक्षा शालात्यागी तथा आगत–निर्गत सूचक जैसी समस्यायें आती हैं। ये समस्यायें प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण को प्रभावित कर रहे हैं। जब तक प्राथमिक शिक्षा में 6 से 14 वर्ष तक के सभी बच्चों को विद्यालयों मे नामांकित कराकर उन्हे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान नहीं की जाती तथा प्राथमिक विद्यालयों में अनुतीर्ण होने से तथा किन्हीं अन्य कारणों से बार–बार कक्षा पुनरावृत्ति एवं विद्यालय पलायन जैसी समस्याओ का निदान नहीं किया जायेगा तब तक शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करना कठिन होगा। हमारे देश की प्राथमिक शिक्षा में 'अवरोधन' की समस्या भी उतना ही विकराल है जितना कि अपव्यय। अवरोधन की समस्या प्राथमिक शिक्षा में प्रारम्भ से ही एक गम्भीर चुनौती रहा है। शिक्षा एक सतत् विकासशील प्रक्रिया है। शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लक्ष्यों को प्राप्त करने में नवाचारों के अनुप्रयोग के साथ–साथ समय–समय पर अनेक शैक्षिक कार्य योजनाएं क्रियान्वित की जा रही हैं। शिक्षा प्रत्येक बालक व बालिका का मौलिक अधिकार है। अतः समस्त शैक्षिक कार्ययोजनाओं का उद्देश्य देश के प्रत्येक बालक एवं बालिका को शिक्षा की मुख्य धारा से जोड़ना है। 6 से 14 वय वर्ग के सभी बच्चों का विद्यालयों में नामांकन व ठहराव सुनिश्चित करना और इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सर्व शिक्षा अभियान एवं जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम जैसे राष्ट्रीय कार्यक्रमों को संचालित करके निरन्तर प्रयास किए जा रहे हैं। विद्यालय पलायन के मुख्य कारणों में एक महिलाओं का अशिक्षित होना भी है, क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकतर पुरूष रोजगार की तलाश में घर से दूर चले जाते हैं। महिला शिक्षा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए डा0 राधाकृष्णन आयोग (1948) ने सिफारिश की थी कि–''वहाँ शिक्षित लोग नहीं हो सकते, जहाँ शिक्षित महिलायें न हों, पलायन आज शिक्षा जगत की प्रमुख समस्या है। पलायन की समस्या का अध्ययन शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लिए आवश्यक है। वर्तमान समय में शिक्षा के महत्व को ध्यान में रखते हुए सरकार द्वारा देश के प्रत्येक क्षेत्र में शिक्षा का प्रचार व प्रसार किया जा रहा है। क्योंकि शिक्षा के माध्यम से ही मनुष्य का आर्थिक, सामाजिक, नैतिक, चारित्रिक विकास तथा सामाजिक विकास संभव है। ऐसा प्रजातांत्रिक युग के लिए अत्यन्त आवश्यक है। प्रस्तुत प्रवाह आरेखण से सम्बन्धित समस्यायें प्राथमिक शिक्षा में वैश्विक स्तर पर व्याप्त है। यह समस्या केवल भारतवर्ष की ही नहीं अपितु पूरे विश्व की समस्या हो गयी है। समाज में गरीबी, भुखमरी, अशिक्षा, शिक्षा के प्रति नकारात्मक सोच, भाग्यवादी एवं धार्मिक दृष्टिकोण आदि समस्याओं से बच्चों की शिक्षा पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। अतः पीढ़ी दर पीढ़ी प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण, सर्वसुलभता, एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सभी प्रयास असफल हो जाते हैं।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

रैकवार (2000) के अनुसार शिक्षा में गुणवत्ता का अर्थ है मानक स्तर की शिक्षा विद्यार्थी अपनी आयु एवं कक्षा के अनुसार शिक्षा के न्यूनतम अधिगम स्तर को प्राप्त करें यह समाज की मॉग होती है। शिक्षा मनुष्य के विकास की अभिव्यक्ति है। शिक्षा के द्वारा ही इच्छा शक्ति की धारा पर सार्थक नियंत्रण स्थापित हो सकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में ''सभी के लिए शिक्षा'' की पुनरावृत्ति की गयी थी। इसमें जाति, धर्म, वर्ग, क्षेत्र तथा गरीबी–अमीरी के भेदभाव के बिना सभी बच्चों को क्षमता और समानता के सिद्धान्त पर आधारित शिक्षा व्यवस्था उपलब्ध कराने का संकल्प लिया गया था। इसमें यह उल्लेख किया गया है कि देश में संचालित विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रमों का सघन मूल्यांकन आवश्यक है जिससे विभिन्न कार्यक्रमों की प्रगति एवं गुणवत्ता का आंकलन किया जा सकता है। प्रारम्भिक शिक्षा में अपव्यय एवं अवरोधन एक भीषण समस्या है। इस समस्या के प्रति 1929 में हर्टांग समिति ने ध्यान आकृष्ट किया था। समिति ने कहा कि यद्यपि प्राथमिक विद्यालयों तथा बच्चों की संख्या में वृद्धि हुई है पर इसका अभिप्राय यह नहीं है कि प्राथमिक शिक्षा में प्रगति हो रही है आज भी कितने ही अभिभावक ऐसे हैं जो कठिन परिस्थितियों के शिकंजे में फंसे होने के कारण अपने बच्चों को प्राथमिक शिक्षा का पाठ्यक्रम पूर्ण करने से पूर्व ही विद्यालयों से पृथक कर लेते हैं। स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में ''मेरे विचार से जनसाधारण की अवहेलना करना महान राष्ट्रीय पाप है, और हमारे पतन के कारणों में से एक है, सब राजनीति उस समय तक विफल रहेगी जब तक भारत में जनसाधारण को एक बार फिर भली प्रकार शिक्षित नहीं कर लिया जाएगा।'' महात्मा गाँधी (1937) ने स्पष्ट कहा था कि–''करोड़ों लोगों का निरक्षर रहना भारत के लिए अभिशाप एवं पाप है। हमें इससे मुक्ति पानी ही होगी।'' महात्मा गाँधी ने वर्धा शिक्षा योजना (1937) में बुनियादी शिक्षा को अनिवार्य तथा निःशुल्क करने पर जोर दिया। उन्होंने बुनियादी शिक्षा तथा महिला शिक्षा को राष्ट्र के विकास के लिए आवश्यक माना।

नयाल (1985) ने शिक्षा में पलायन की समस्या का अध्ययन करने के पश्चात यह पाया कि हाईस्कूल स्तर पर पलायनवादी व्यवहार के लिए विभिन्न सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और आर्थिक कारक संयुक्त रूप से जिम्मेदार थे। हमारी अनाकर्षक शिक्षा व्यवस्था भी हाईस्कूल स्तर पर पलायन के लिए जिम्मेदार थी। शिक्षा एवं देश के आर्थिक विकास में उच्च धनात्मक सह सम्बन्ध पाया जाता है। उच्च साक्षरता दर वाले देशों का तीव्र गति से आर्थिक विकास होता है। शिक्षा वैयक्तिक विकास एवं राष्ट्रीय विकास परस्पर सहसम्बन्धित होते हैं। शिक्षा व्यक्ति के विकास की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती है। यह जन्म से ही मानव के पारिवारिक परिवेश में अंकुरित होकर, राष्ट्रीय परिवेश में पल्लवित होते हुए वैश्विक परिवेश को अपने लक्ष्य के रूप में साधने लगती है। शिक्षा मानव की उन्नति के साथ–साथ उसकी संस्कृति के संवर्द्धन व विकास के साथ–साथ उसे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित भी करती है।

कोठारी कमीशन (1964–1966) में भी शिक्षा के विभिन्न स्तरों में अपव्यय एवं अवरोधन का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि जब तक शिक्षा प्रक्रिया में अपव्यय एवं अवरोधन की समस्या के समाधान का सार्थक प्रयास नहीं किया जाता तब तक शिक्षा में गुणवत्ता एवं शिक्षा के सफल संचालन का प्रयास कल्पना मात्र है। कमीशन के अनुसार निम्न प्राथमिक स्तर पर बालकों में 56 प्रतिशत व बालिकाओं की शिक्षा में 62 प्रतिशत अपव्यय था। प्राथमिक स्तर पर यह अनुपात बालक एवं बालिकाओं में क्रमशः 24 प्रतिशत व 34 प्रतिशत था। इसी प्रकार उक्त कमीशन में यह स्पष्ट किया गया था कि बालकों की कक्षा 1 में अवरोधन 40.3 प्रतिशत तथा कक्षा 4 में 21.7 प्रतिशत तथा कक्षा 8 में 13.2 प्रतिशत था, इसी प्रकार बालिकाओं की शिक्षा में कक्षा 1, 4 व 8 में अवरोधन क्रमशः 47.1 प्रतिशत, 25.6 प्रतिशत् तथा 16.6 प्रतिशत था जो कि बालकों की शिक्षा की अपेक्षा अधिक था।

उत्तराखण्ड सभी के लिए शिक्षा परिषद, डी0पी0ई0पी0 III (2006) के अनुसार विद्यालय में कोहोर्ट (Cohort) का निर्माण, विश्लेषण एवं

उसके प्रदर्शन से उस विद्यालय की शिक्षा की गुणवत्ता की परख आसानी से की जा सकती है। परिषद द्वारा संचालित कार्यक्रमों का उद्देश्य शिक्षा हेतु सुविधाएं प्रदान करना ही नहीं है, बल्कि गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्रदान कर विद्यार्थियों के अधिगम उपलब्धि स्तर को सुधारना भी है। शैक्षिक गुणवत्ता को किस प्रकार पाया जाय इस हेतु कोहोर्ट एक अत्यन्त महत्वपूर्ण टूल (उपकरण) है।

पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से रैकवार (2000), राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986), नयाल (1985), कोठारी कमीशन (1964–1966), डी0पी0ई0पी0 III (2006), गुप्ता (1983), तोमर (1991), मिश्र (1998) एवं वर्धा शिक्षा योजना (1937) ने शोध विषय से सम्बन्धित कार्य किये है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किया गया है:–

जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में आगत–निर्गत सूचक का लिंग के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

शोध कार्य की मुख्य परिकल्पना निम्न है:–

राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में आगत–निर्गत सूचक में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं होता है।

शोध विधि – प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण शोध विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श चयन

उतराखण्ड के सीमान्त जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् कक्षा 1 से 5 तक के सभी बच्चों का अध्ययन के लिए चयन किया गया है।

उपकरण तथा तकनीकें

प्रस्तुत शोध कार्य में न्यादर्श समूहों के प्राप्तांक प्रतिशत के आधार पर ज मान की सहायता से मध्यमान अन्तर की सार्थकता का आंकलन किया गया है।

't' परीक्षण के लिए निम्न सूत्र का प्रयोग किया गया–

$$t = \frac{M1 - M2}{SED}$$

M1= पहले न्यादर्श समूह का मध्यमान
M2= दूसरे न्यादर्श समूह का मध्यमान
SED = मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि

$$SED = \sqrt{PQ\left[\frac{1}{N1} + \frac{1}{N2}\right]}$$

$$P = \frac{N1P1 + N2P2}{N1 + P1}$$

आगत–निर्गत अनुपात = $\dfrac{\text{व्यय विद्यार्थी वर्ष (वास्तविक)}}{\text{आदर्श विद्यार्थी वर्ष}}$

तालिका संख्या–01
आगत–निर्गत अनुपात–कुल

कक्षा 1 में नामांकित कुल बच्चे	शिक्षा चक्र पार करने वाले बच्चे	व्यय विद्यार्थी वर्ष (वास्तविक)	आदर्श विद्यार्थी वर्ष	आगत–निर्गत अनुपात
11826	9831	58528	49155	1.19

तालिका संख्या–01 में जनपद पिथौरागढ़ का कक्षा 1 में नामांकित कुल बच्चों में शिक्षा चक्र पार करने वाले बच्चों का आगत–निर्गत अनुपात दर्शाया गया है। तालिका में प्रस्तुत प्रदत्तों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि कक्षा 1 में नामांकित कुल 11826 बच्चों में से शिक्षा चक्र पार करने वाले 9831 बच्चों का व्यय विद्यार्थी वर्ष वास्तविक 58528 विद्यार्थी वर्ष था तथा आदर्श विद्यार्थी वर्ष 49155 विद्यार्थी वर्ष था। इससे यह स्पष्ट होता है कि कक्षा 1 में नामांकित कुल बच्चों में शिक्षा चक्र पार करने वाले बच्चों का आगत–निर्गत अनुपात 1ण19 था। आदर्श स्थिति में आगत–निर्गत अनुपात 1 होता है। कुल बच्चों में शिक्षा चक्र पार करने वाले बच्चों का आगत–निर्गत अनुपात 0ण19 अधिक था।

तालिका संख्या–02
आगत–निर्गत अनुपात–बालक

कक्षा 1 में नामांकित कुल बालक	शिक्षा चक्र पार करने वाले बालक	व्यय विद्यार्थी वर्ष (वास्तविक)	आदर्श विद्यार्थी वर्ष	आगत–निर्गत अनुपात
5583	4688	27687	23440	1.18

तालिका संख्या–02 में जनपद पिथौरागढ़ का कक्षा 1 में नामांकित कुल बालकों में शिक्षा चक्र पार करने वाले बालकों का आगत–निर्गत अनुपात दर्शाया गया है। तालिका में प्रस्तुत प्रदत्तों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि कक्षा 1 में नामांकित कुल 5583 बालकों में से शिक्षा चक्र पार करने वाले 4688 बालकों का व्यय विद्यार्थी वर्ष वास्तविक 27687 विद्यार्थी वर्ष था तथा आदर्श विद्यार्थी वर्ष 23440 विद्यार्थी वर्ष था। इससे यह स्पष्ट होता है कि कक्षा 1 में नामांकित कुल बालकों में शिक्षा चक्र पार करने वाले बालकों का आगत–निर्गत अनुपात 1ण18 था। आदर्श स्थिति में आगत–निर्गत अनुपात 1 होता है। कुल बालकों में शिक्षा चक्र पार करने वाले बालकों का आगत–निर्गत अनुपात 0ण18 अधिक था।

तालिका संख्या–03
आगत–निर्गत अनुपात–बालिका

कक्षा 1 में नामांकित कुल बालिकायें	शिक्षा चक्र पार करने वाली बालिकायें	व्यय विद्यार्थी वर्ष (वास्तविक)	आदर्श विद्यार्थी वर्ष	आगत–निर्गत अनुपात
6243	5143	30841	25715	1.20

तालिका संख्या–03 में जनपद पिथौरागढ़ का कक्षा 1 में नामांकित कुल बालिकाओं में शिक्षा चक्र पार करने वाली बालिकाओं का आगत–निर्गत अनुपात दर्शाया गया है। तालिका में प्रस्तुत प्रदत्तों का अवलोकन करने पर स्पष्ट होता है कि कक्षा 1 में नामांकित कुल 6243 बालिकाओं में से शिक्षा चक्र पार करने वाली 5143 बालिकाओं का व्यय विद्यार्थी वर्ष (वास्तविक) 30841 विद्यार्थी वर्ष था तथा आदर्श विद्यार्थी वर्ष 25715 विद्यार्थी वर्ष था। इससे यह स्पष्ट होता है कि कक्षा 1 में नामांकित कुल बालिकाओं में शिक्षा चक्र पार करने वाली बालिकाओं का आगत–निर्गत अनुपात 1ण20 था। आदर्श स्थिति में आगत–निर्गत अनुपात 1 होता है। कुल बालिकाओं में शिक्षा चक्र पार करने वाले बालिकाओं का आगत–निर्गत अनुपात 0ण20 अधिक था।

परिणाम

जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक–बालिकाओं में आगत–निर्गत अनुपात का लिंग के आधार पर अध्ययन करने पर निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए।

कुल बच्चों में प्राथमिक शिक्षा चक्र पार करने वाले बच्चों का आगत–निर्गत अनुपात 1ण19 था जोकि 0ण19 अधिक था।
कुल बालकों में प्राथमिक शिक्षा चक्र पार करने वाले बालकों का आगत–निर्गत अनुपात 1ण18 था जोकि 0ण18 अधिक था।
कुल बालिकाओं में प्राथमिक शिक्षा चक्र पार करने वाली बालिकाओं का आगत–निर्गत अनुपात 1ण20 था। जोकि 0ण20 अधिक था। आदर्श स्थिति में आगत–निर्गत अनुपात 1 होता है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त शोध अध्ययन के विवेचन से यह निष्कर्ष निकलता है कि जनपद पिथौरागढ़ के राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षा 1 से 5 तक अध्ययनरत् बालक बालिकाओं में आगत–निर्गत अनुपात में लिंग के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। दोनों न्यादर्श समूहों के मध्य प्रतिशत प्राप्तांकों में अन्तर था परन्तु यह अन्तर सांख्यिकीय दृष्टिकोण से सार्थक नहीं पाया गया। इससे यह स्पष्ट होता है कि राजकीय प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् बालक बालिकायें लगभग समान रूप से आगत–निर्गत अनुपात की समस्या से प्रभावित थे। अतः परिकल्पना सही सिद्ध होती है।

अध्ययन के निहितार्थ

प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त परिणामों के आधार पर आगत–निर्गत अनुपात के अध्ययन के उपरान्त निम्नलिखित सुझाव समीचीन प्रतीत होते है। ये निष्कर्ष एवं सुझाव शिक्षा के योजनाकारों, प्रशासकों तथा शिक्षकों के लिए प्राथमिक शिक्षा के प्रसार तथा गुणवत्तापरक शिक्षा के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते है।

1. प्राथमिक शिक्षा में आगत–निर्गत में आने वाली समस्याओं के कारणों को चिन्हित कर उनके समाधान के लिए लिए प्रभावी कदम उठाए जाने चाहिए जिससे विद्यार्थियों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए आवश्यक वातावरण सृजित किया जा सकता है जिससे बच्चे उच्च शैक्षिक उपलिब्ध स्तर को प्राप्त कर सकते है।
2 बुनियादी शिक्षा में एक कक्षा में एक से अधिक वर्ष व्यतीत करने के कारणों को पता लगाकर उसके समाधान हेतु ठोस नीति तैयार किया जा सकता है।
3 प्राथमिक शिक्षा में कक्षा पुनरावृति की समस्या के समाधान के लिए शिक्षण नवाचारों का प्रयोग कर शिक्षण को व्यावहारिक, आसान व रूचिकर बनाने का प्रयास अपेक्षित है।
4 जो विद्यार्थी अनुतीर्ण हो रहे है अथवा निम्न शैक्षिक उपलिब्ध के कारण अवसादग्रस्त है उनके मार्गदर्शन हेतु परामर्शदाता की व्यवस्था विद्यालयों में की जानी चाहिए।
5 प्राथमिक शिक्षा में अपव्यय एंव अवरोधन जैसी समस्याओं के समाधान हेतु आवश्यक कदम उठाये जाने चाहिए इस हेतु माता–पिता तथा अभिभावकों को प्रेरित करने के लिए निरन्तर विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया जा सकता है।
6. प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षण के साथ–साथ पाठ्य सहगामी क्रियाकलापो में बच्चो की समुचित भागेदारी सुनिश्चित कराकर तथा शिक्षण में खेल विधि का प्रयोग किया जाये, जिससे बच्चों में शिक्षण के प्रति रूचि तथा आत्मविश्वास में वृद्धि किया जा सके।
7. प्राथमिक शिक्षा हेतु दूरस्थ क्षेत्रों में समस्त शैक्षिक सुविधायें विकसित कर नामांकन और ठहराव में वृद्धि किया जा सकता है।
8. प्राथमिक शिक्षा चक्र के एक कक्षा में 01 वर्ष या उससे अधिक वर्ष व्यतीत करने के कारणों को पता लगाकर उनके समाधान के ठोस प्रयास करने होगें।
9. बुनियादी शिक्षा प्रत्येक नागरिक की मूलभूत आवश्कता है। इसके बिना भविष्य की नींव मजबूत नहीं हो सकती है। अतः बुनियादी शिक्षा के प्रसार व गुणवत्ता के लिए आवश्यक कदम उठाने होंगे।

यदि इनपुट–आउटपुट का अनुपात 01 से अधिक आता है जो यह बताता है कि हमारे विद्यालयों का इनपुट अधिक है और आउटपुट कम है। अतः इसमें लागत ज्यादा और उत्पादन कम होगा। अतः इसका अर्थ यह हुआ कि कक्षा 01 में नामांकित सभी बच्चे निर्धारित 05 वर्ष में प्राथमिक शिक्षा चक्र पूर्ण नहीं कर पा रहे है। स्पष्ट है कि प्राथमिक शिक्षा में आगत–निर्गत अनुपात आदर्श स्थिति से अधिक होने से अपव्यय एवं अवरोधन जैसी समस्यायें व्याप्त होती हैं। जब तक प्राथमिक शिक्षा में आगत–निर्गत अनुपात आदर्श स्थिति से अधिक होने के कारणों का पता लगाकर उन्हें दूर करने का सार्थक प्रयास नहीं किया जायेगा तब तक राष्ट्र तथा समाज के भविष्य का ठोस आधार विकसित नहीं किया जा सकता है। ऐसा प्रयास किया जाना समीचीन होगा क्योंकि राष्ट्र का भविष्य इन्हीं बालक व बालिकाओं के कन्धों पर है। जब तक सभी बालक–बालिकाओं को विद्यालयों में नामांकित कराकर उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर तथा उन्हें निर्धारित समय में प्राथमिक शिक्षा चक्र पार कराकर उनका सर्वांगींण विकास नहीं किया जाता तब तक राष्ट्र के उज्जवल भविष्य की कल्पना करना व्यर्थ ही होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1.रैकवार, रामगोपाल (2000) प्राथमिक शिक्षा में गुणवत्ता स्तर की समस्या, प्राइमरी शिक्षक, अप्रैल, 12–16।
2.गुप्ता, दलजीत (1983) ''ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ नॉनफारमल एजुकेशन प्रोग्राम'' (ऐज ग्रुप 9–14) रन बाई डिफ्रेन्ट एजेन्सीज इन द स्टेट ऑफ मध्य प्रदेश पी.एच.डी. एजुकेशन, भोपाल विश्वविद्यालय ।
3.मिश्र, जयनारायण (1998) अनुदेशकों की दृष्टि में अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम की समस्यायें, भारतीय आधुनिक शिक्षा, जुलाय, 15–23।
4.तोमर, लज्जाराम (1991) भारतीय शिक्षा के मूल तत्व, सुरूचि प्रकाशन केशवकुंज झण्डेवाला, नई दिल्ली, संस्करण।
5.गैरेट, एच. ई (1981) मनोविज्ञान एंव शिक्षा में सांख्यिकी। दशम संस्करण। बी एफ एण्ड सन्स बॉम्बे।
6.नयाल, जी. एस (1985) विद्यालय से पलायन के कारण भारतीय आधुनिक शिक्षा। वर्ष द्वितीय अंक चतुर्थ। एनण सीण ई. आर. टी. नई दिल्ली।
7.उतरांचल दूरस्थ शिक्षा कार्यकम (2006) विद्यार्थी प्रवाह आरेखण एंव विश्लेषण। उतरांचल सभी के लिए शिक्षा परिषद डी. पी. ई. पी. – 3 देहरादून
8.पाठक, पीण डी एंव त्यागी, जी. एस. डी. (2008) भारतीय शिक्षा के आयोग कोठारी कमीशन सहित। आगरा पब्लिकेशन आगरा।
9.मानव संसाधन विकास मंत्रालय (2002) सर्व शिक्षा प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण के लिए एक अभियान। नई दिल्ली : प्रारम्भिक शिक्षा एंव साक्षरता विभाग।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Book Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org